उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन

लक्ष्मी कुमारी*
शिरीष पाल सिंह**

यह शोध पत्र उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का जेंडर तथा कक्षा के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन पर किए गए शोध अध्ययन पर आधारित है। यह शोध कार्य वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि पर आधारित था। शोधार्थी द्वारा प्रतिदर्श के रूप में कार्तिक उरांव आदिवासी बाल विकास उच्च विद्यालय, सिसई, गुमला (झारखण्ड) के अध्ययन सत्र 2019–20 के कक्षा 9 एवं 10 के 100 विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श प्रविधि द्वारा किया गया। आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधार्थी द्वारा अकादमिक प्रभावशीलता मापनी का निर्माण किया गया, जो तीन बिंदु लिकर्ट मापनी पर आधारित है। इस मापनी का उद्देश्य विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का मापन करना था। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत तथा स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया था। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ कि उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है। उरांव जनजाति के बालक तथा बालिकाओं की अकादमिक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, साथ ही उरांव जनजाति के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता, कक्षा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है।

भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता की परिचायक है। यह अनेकता धार्मिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूपों में विद्यमान है। इस अनेकता का एक आधार जनजातियों की विभिन्नता भी है, जो भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में पाई जाती है। इन वन्य जातियों को क्षेत्रीय विषमताओं और सांस्कृतिक विचित्रता के कारण अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। कहीं पर इन्हें जनजाति तो कहीं वन्य जनजाति के नाम से जाना जाता है। वन्य जनजातियों की विविधता ही भारतीय संस्कृति को उत्कृष्ट बनाती है और भारत को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। इन सभी जनजातियों में विभिन्नता होते हुए भी ये एक-दूसरे से कहीं न कहीं जुड़ी हुई हैं। भारत की जनगणना, 2011 के अनुसार, भारत की संपूर्ण जनसंख्या में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 8.2 करोड़ थी। जो अपनी सुनिश्चित भौगोलिक स्थिति के कारण एक विशेष सांस्कृतिक प्रतिभा को समाविष्ट किए हुए है, किंतु

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442005
***एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442005

Not to be republished © NCERT

विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण आधुनिक समाज से ये जनजातियाँ अलग हैं। परिणामस्वरूप ये जनजातियाँ शेष भारतीय समाज की तुलना में बहुत पिछड़ी हुई हैं। इन जनजातियों को अशिक्षा, अज्ञानता, अंधविश्वास जैसी बुराइयों ने ग्रसित कर रखा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार उन्हें मुख्य धारा में लाने का समुचित प्रयास कर रही है (पाशा, 2016)।

भारत सरकार द्वारा सन् 1967 से संवैधानिक सुरक्षा होने के बावजूद जनजाति समूहों में सामाजिक न्याय, सकारात्मक अभिवृत्ति और शैक्षिक जागरूकता का स्तर अब भी निम्न है। अतः वर्तमान भारत में जनजातियों का विकास करना और उन्हें अभावग्रस्त स्थिति से निकालकर देश की मुख्य धारा के साथ जोड़ना, केंद्र एवं राज्य सरकारों तथा राजनीतिक एवं समाज सुधारकों के लिए चिंतन का विषय रहा है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में भी प्रजातंत्रात्मक समाजवाद की बात कही गई है। इसके लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर न्याय प्राप्त करने हेतु सभी को व्यक्तित्व के विकास के समान अवसर प्रदान करने की अपेक्षा सुनिश्चित की गई है (सिंह,1992)। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में यह घोषणा की गई कि, 'राज्य संविधान के प्रारम्भ से 10 वर्ष की कालावधि के अंदर सभी बच्चों को 14 वर्ष की आयु समाप्ति तक नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने के लिए प्रबंध करेगा' और तभी से राज्यों ने 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों की अनिवार्य एवं नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास शुरू किया। आगे चलकर सन् 2002 में, 86वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान में एक नया अनुच्छेद 21(क) जोड़ा गया, जिसमें इस बात पर बल दिया गया कि, 'राज्य, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का ऐसी रीति में, जो राज्य विधि द्वारा, अवधारित करे, उपबंध करेगा।' और इसी 86वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान के भाग 4(क) में वर्णित मूल कर्तव्यों में एक नया मूल कर्तव्य 51(ट) जोड़ा गया जिसमें कहा गया कि, 'माता-पिता या संरक्षक 6 से 14 वर्ष तक कि आयु वाले, अपने यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।' आगे चलकर सन् 2009 में, बच्चों का नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 पास किया गया। इस अधिनियम के अनुसार 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों को कक्षा 1 से 8 तक की नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करने का मूल अधिकार है। सरकार ने 1 अप्रैल, 2010 से इसे कानून के रूप में लागू भी कर दिया है। इसके संविधान के अनुच्छेद 46 में यह भी घोषणा की है कि 'राज्य जनता के दुर्बल वर्गों के विशिष्टतया अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शिक्षा और अर्थ संबंधी हितों की विशेष सावधानी से अभिवृद्धि करेगा, साथ ही सामाजिक और सभी प्रकार के शोषण से उसकी रक्षा करेगा।

उरांव जनजाति

उरांव जनजाति भारत के मूल निवासियों में से एक प्रमुख समूह है। इस जनजाति के सदस्य भारत के बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, असम, त्रिपुरा तथा अंडमान आदि राज्यों में निवास करते हैं। ये देश के बाहरी हिस्सों, जैसे— नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और पश्चिमी पाकिस्तान में भी बसे हुए हैं। यह झारखण्ड के पठारी भागों मुख्यतः

© NCERT not to be republished

गुमला, लोहरदगा, राँची, पलामू, हजारीबाग, सिमडेगा और पूर्वी सिंहभूम ज़िले में निवास करते हैं। झारखण्ड में 32 जनजातियाँ निवास करती हैं। उनमें से सबसे अधिक शिक्षा एवं विकास की दृष्टि में उरांव को विकसित माना जाता है। कृषि के अतिरिक्त आज ये विभिन्न सेवा और व्यवसाय में कार्यरत हैं। उरांव परंपरा के अनुसार, उरांव के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यता में था। उरांव की अपनी शासन व्यवस्था रोहतासगढ़ थी। वहाँ पर इनकी रहन-सहन, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था अधिक विकसित थी। इस कारण उरांव के लोग उरागान ठाकुर कहलाते थे। उरांव की अपनी भाषा कुड़ूख है तथा भाषिक दृष्टि से कुड़ूख भाषा द्रविड़ भाषा परिवार में रखी गयी है (पालीवाल, 2011)।

उरांव जनजाति का ऐतिहासिक परिचय

उरांव, मुंडा, संथाल, हो तथा अन्य सभी जनजातियाँ एक परिवार की हैं। जो अपनी भाषा के आधार पर द्रविड़ वर्ग की मानी जाती हैं (दास, 2006)। इसका मुख्य कारण उरांव का ऐतिहासिक विवरण है। उरांव उत्तर भारत से दक्षिण कब पहुँचे? यह ज्ञात नहीं है और इस काल में वे अपनी मूल भाषा को भूल बैठे, किंतु दक्षिण में उन्होंने सदियों से द्रविड़ को अपना लिया। अपेक्षाकृत अपने नए इतिहास से उरांव, कर्नाटक से उत्तरी क्षेत्र की ओर बढ़ने वाली जनजाति मानी जाती है। यह तथ्य उनकी परंपरा से सुनने को मिलता है कि वे कर्नाटक की मूल जनजाति हैं। वे कर्नाटक से होते हुऐ बिहार, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सोन नदी और नर्मदा घाटी पहुँचे, जहाँ से उन्हें पुनः अपेक्षाकृत कम उर्वरक क्षेत्र छोटा नागपुर में शरण लेनी पड़ी। छत्तीसगढ़ एवं झारखंड में प्रवेश करने से पूर्व ही उरांव शिकार, पशुपालन, यायावर आदि की अवस्था को पार कर स्थायी उन्नत कृषि-पद्धति एवं सामाजिक व्यवस्था यहाँ लेकर आए। जब उरांव यहाँ आए तो उदार मुंडा जनजाति के सदस्यों ने इसका कोई विरोध नहीं किया। मुंडा तथा उरांव दोनों साथ-साथ रहने लगे। उरांव, मुंडा से अधिक चतुर, कृषि में प्रवीण और रण कौशल में दक्ष थे। उरांव का दूसरा जनप्रवाह रोहतसगढ़ से आया जिससे उनका बल और महत्व बढ़ गया। उरांव की आबादी बढ़ती गई और बस्तियों का विस्तार होता रहा अर्थात् उरांव विकास की ओर बढ़ते गए (चन्द्रा और नायक, 2018)।

उरांव जनजातियों का शैक्षिक स्तर

व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षा की अपनी विशिष्ट भूमिका होती है। जनजातीय समाज साक्षरता एवं आधुनिक शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा हुआ समाज है। निक्षरता का अनुपात स्त्रियों में पुरुष की अपेक्षा अधिक है। बाटोमोर (1972) के अनुसार, 'शिक्षा आवश्यक रूप से नयी पीढ़ी के समाजीकरण का कार्य करती है।' 2011 की जनगणना के आँकड़े यह दर्शाते हैं कि अखिल भारतीय साक्षरता स्तर 74.04 प्रतिशत था, जबकि अनुसूचित जनजाति में यह स्तर मात्र 58.96 प्रतिशत था। भारत की केंद्रीय मुख्य जनजातीय क्षेत्र-विस्तार तक सीमित रखते हुए, साक्षरता का अनुपात बिहार में 51.1 प्रतिशत, झारखंड में 57.1 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 50.6 प्रतिशत, आन्ध्रप्रदेश में 49.2 प्रतिशत, ओडिशा में 52.2 प्रतिशत, जम्मू-कश्मीर में 50.6 प्रतिशत, तमिलनाडु में 54.3 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 55.7 प्रतिशत, पश्चिम बंगाल में 57.9 प्रतिशत तथा राजस्थान 52.8 प्रतिशत है। जनजातीय समुदाय के अन्य सामाजिक-आर्थिक पक्षों

© NCERT not to be republished

के अनुसार शिक्षा में कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार, संपूर्ण जनजाति का मात्र 58.96 प्रतिशत भाग ही शिक्षित था (स्टैटिस्टिकल प्रोफ़ाइल ऑफ़ शेड्यूल्ड ट्राइब्स इन इंडिया, 2013)। फिर भी दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाली जनजातियों में शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं कही जा सकती (चन्द्रा तथा नायक 2018)। उरांव जनजाति के सदस्यों की साक्षरता दर अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक है। भारत की जनसंख्या, 2011 के अनुसार, झारखण्ड में उरांव जनजाति की साक्षरता दर 52.5 प्रतिशत थी (रस्तोगी और मेनन, 2013)।

शोध का औचित्य

इस शोध अध्ययन में उरांव जनजाति की सामाजिक, आर्थिक स्थिति एवं संस्कृति के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि उरांव जनजातियों के विद्यार्थियों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कौन-कौन सी समस्याएँ बाधा उत्पन्न करती हैं। उरांव जनजाति के विद्यार्थियों से जुड़ी समस्याओं को समझना एवं उनकी सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को समझना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता पर कोई शोध अध्ययन नहीं पाया गया। अतः इस रिक्तता की पूर्ति के लिए इस शोध समस्या का चयन किया गया।

अकादमिक प्रभावशीलता का अर्थ

अकादमिक प्रभावशीलता किसी व्यक्ति के उस विश्वास को संदर्भित करती है, जो किसी अकादमिक कार्य के एक निर्दिष्ट स्तर को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकता है या किसी विशिष्ट अकादमिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे —

- उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के मापन के लिए अकादमिक प्रभावशीलता मापनी का निर्माण करना।
- उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के स्तर का अध्ययन करना।
- उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करना।
- उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ थीं —

- उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता उच्च स्तर की है।
- उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के छात्र तथा छात्राओं के अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है।
- उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि एवं प्रक्रिया

इस अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

© NCERT not to be republished

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में झारखंड राज्य के गुमला ज़िला, सिसई प्रखण्ड के उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के समस्त विद्यालयों के समस्त विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया था।

प्रतिदर्श प्रविधि तथा प्रतिदर्श

इस लघु शोध अध्ययन में प्रतिदर्श चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श प्रविधि का उपयोग कर प्रतिदर्श के रूप में कार्तिक उरांव आदिवासी बाल विकास उच्च विद्यालय सिसई, गुमला (झारखण्ड) के अध्ययन सत्र 2019–20 के कक्षा 9 एवं 10 के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के मापन हेतु स्वनिर्मित अकादमिक प्रभावशीलता मापनी का निर्माण तथा उपयोग किया गया है। यह मापनी तीन बिंदू, लिकर्ट मापनी पर आधारित है। इस मापनी में कुल 36 कथन हैं, जिसमें 24 धनात्मक एवं 12 ऋणात्मक हैं। यह मापनी अकादमिक प्रभावशीलता के 11 आयामों पर आधारित है। जिसका आयामवार विवरण तालिका 1 में दिया गया है।

फलांकन प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा विद्यार्थियों पर इस मापनी के प्रशासन पश्चात् प्राप्तांकों का फलांकन, फलांकन कुंजी की सहायता से किया गया। विद्यार्थियों की सकारात्मक कथनों पर सहमत, अनिश्चित तथा असहमत प्रतिक्रिया पर क्रमश: 3, 2 एवं 1 अंक तथा

तालिका 1— विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता से संबंधित आयाम

क्र.सं.	प्रसंग/आयाम	मापनी में धनात्मक एकांशों/ कथनों की स्थिति का क्रमांक	मापनी में ऋणात्मक एकांशों/कथनों की स्थिति का क्रमांक	कथनों की संख्या
1.	कक्षा अंतःक्रिया	1	5	2
2.	पाठ्य सहगामी क्रियाएँ	3,11,7	9	4
3.	समय प्रबंधन	10,13	2	3
4.	अधिगम प्रक्रिया	4,6,8	_	3
5.	परीक्षा	20, 23, 25	17, 29	5
6.	शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध	14,16, 18, 21, 24, 28, 34, 36	12, 26, 30, 32	12
7.	सहपाठी संबंध	35, 33	_	2
8.	जीवन लक्ष्य	_	27	1
9.	पाठ्यसामग्री	31, 32	_	2
10.	समायोजन	_	19	1
11.	पठन-पाठन	_	15	1
	कुल	24	12	36

© NCERT not to be republished

नकारात्मक कथनों पर क्रमश: 1, 2 तथा 3 अंक प्रदान किए गए हैं। इस प्रकार मापनी में प्राप्तांकों का न्यूनतम तथा अधिकतम प्रसार 36–108 के मध्य था।

आँकड़ों के संकलन की प्रक्रिया

प्रदत्त संग्रहण हेतु सर्वप्रथम शोधार्थी न्यादर्श में चयनित झारखंड राज्य के गुमला ज़िले के कार्तिक उरांव आदिवासी बाल विकास उच्च विद्यालय, सिसई पहुँची और वहाँ के प्रधानाचार्य से अनुमति लेकर कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित कर, उन्हें शोध अध्ययन से अवगत कराया। तत्पश्चात् शोधार्थी द्वारा संपूर्ण कक्षा 9 व 10 में उपकरण को प्रशासित कर प्रदत्त संकलित किए गए।

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधि

इस शोध अध्ययन में प्राप्त समस्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा उद्देश्यवार उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधियों द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया —

- शोधार्थी द्वारा उरांव जनजाति के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के स्तर का अध्ययन करने के लिए प्रतिशत सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया।
- शोधार्थी द्वारा उरांव जनजाति के कक्षा 9 व 10 के छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया।
- शोधार्थी द्वारा उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

इस शोध अध्ययन में समस्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधार्थी द्वारा उद्देश्यवार उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधि द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया —

- शोध अध्ययन के प्रथम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित अकादमिक प्रभावशीलता मापनी का निर्माण किया गया है। इस मापनी में अकादमिक प्रभावशीलता के कुल 11 आयामों को दृष्टिगत रखते हुए 36 कथनों (24 धनात्मक एवं 12 ऋणात्मक कथन) को समिल्लित किया गया।
- शोध अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए सभी विद्यार्थियों से प्राप्त आँकड़ों का प्रतिशत के आधार पर विश्लेषण किया गया, जिसका परिणाम तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 2— वर्ग-अंतरालवार विद्यार्थियों की संख्या एवं प्रभावशीलता के स्तर

क्र. सं.	वर्ग-अंतराल	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत (%)	प्रभावशीलता का स्तर
1.	85 – 108	93	93 %	उच्च स्तर
2.	61 – 84	07	07 %	मध्य स्तर
3.	36 – 36	00	00	निम्न स्तर
कुल	_	100	100 %	

© NCERT not to be republished

तालिका 2 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कुल 100 विद्यार्थियों में से 93 विद्यार्थियों के प्राप्तांक वर्गान्तराल 85–108 में आए। सात विद्यार्थियों के प्राप्तांक वर्गान्तराल 61–84 में हैं। जबकि वर्गान्तराल 36–36 में कोई भी विद्यार्थी नहीं है। चूँकि चयनित न्यादर्श का 93 प्रतिशत भाग अकादमिक प्रभावशीलता के उच्च स्तर से संबंधित है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है।

अतः तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि कार्तिक उरांव आदिवासी बाल विकास उच्च विद्यालय के उरांव जनजाति के अधिकांश विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता उच्च स्तर की है।

- शोध अध्ययन के तृतीय उद्देश्य उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा कक्षा 10 के छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए विद्यार्थियों से प्राप्त आँकड़ों को जेंडर के आधार पर व्यवस्थित कर स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया, जिसका वर्णन तालिका 3 में दिया गया है

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करने पर छात्रों की अकादमिक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य 90.10 तथा मानक विचलन 4.114 है। इसी प्रकार छात्राओं के अकादमिक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य 90.78 तथा मानक विचलन 3.828 है। छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता का परिकलित t-परीक्षण का मान 0.859 है, जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर 98 स्वातन्त्र्य की मात्रा के तालिका मान 1.984 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना, उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के छात्र तथा छात्राओं के अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं की जा सकती। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि उरांव जनजाति के छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है। उरांव जनजाति के छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता एकसमान है। इसका प्रमुख कारण यह हो सकता है कि इस जनजाति

तालिका 3— समूहवार माध्य, मानक विचलन, df तथा t-मान

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	df	t-मान	तालिका मान (0.05 स्तर पर)	टिप्पणी	सार्थकता
छात्र	49	90.10	4.114	98	0.859	1.984	शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जा सकती	अंतर सार्थक नहीं है
छात्रा	51	90.78	3.828					

© NCERT not to be republished

के छात्र तथा छात्राएँ अकादमिक प्रभावशीलता के प्रति समान जानकारी रखते हों, साथ ही स्वयं के भविष्य के लिए उनकी शैक्षिक योजनाएँ एकसमान हों। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि उरांव जनजाति के छात्र तथा छात्राओं कि अकादमिक प्रभावशीलता एकसमान है तथा जेंडर का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

- शोध अध्ययन के चतुर्थ उद्देश्य उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करने के लिए विद्यार्थियों से प्राप्त आँकड़ों को कक्षा के आधार पर व्यवस्थित कर, स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया, जिसका वर्णन तालिका 4 में दिया गया है —

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करने पर कक्षा 9 की अकादमिक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य 91.94 तथा मानक विचलन 3.641 है। इसी प्रकार, कक्षा 10 के विद्यार्थियों के अकादमिक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य 88.92 तथा मानक विचलन 3.851 है। कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की आकादमिक प्रभावशीलता का परिकलित t-परीक्षण का मान 4.035 है। जोकि 0.05 सार्थकता स्तर पर 98 स्वातंत्र्य की मात्रा के तालिका मान 1.984 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता में सार्थक अंतर है।

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों कि अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांक, कक्षा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांक से अधिक है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उरांव जनजाति के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता कक्षा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है।

स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण के द्वारा शून्य परिकल्पना निरस्त होने पर यह सिद्ध होता है कि उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता में सार्थक अंतर है। तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों

तालिका 4— समूहवार माध्य, मानक विचलन, df तथा t-मान को दर्शाती तालिका

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	df	t-मान	तालिका मान (0.05 स्तर पर)	टिप्पणी	सार्थक
कक्षा 9	51	91. 94	3.641	98	4.035	1.984	शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है	अंतर सार्थक है
कक्षा 10	49	88.92	3.851					

© NCERT not to be republished

के दोनों समूहों का न्यादर्श आकार तथा प्रसरण समान है; अत: अकादमिक प्रभावशीलता के प्रभाव आकार (इफ़ेक्टिव साइज़) को ज्ञात करने के लिए कोहेन 'd' प्रभाव आकार माप का उपयोग किया गया। जिसके द्वारा प्राप्त परिणामों का विवरण तालिका 5 में दिया गया है —

तालिका 5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि उरांव जनजाति के कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांकों की तुलना करने पर, कक्षा 9 की अकादमिक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य 91.94 तथा मानक विचलन 3.641 है तथा कक्षा 10 के विद्यार्थियों के अकादमिक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य 88.92 तथा मानक विचलन 3.851 है। परिकलित 'd' का निरपेक्ष मान 0.81 है, जो कोहेन द्वारा प्रतिपादित प्रभाव आकार मार्गदर्शिका सारणी में दर्शाए गए मान 0.80 से अधिक तथा 1.2 से कम है (कोहेन, 1988) अर्थात् प्रभाव आकार है। इसके फलस्वरूप यह कहा जा सकता है कि कक्षा स्तर का अकादमिक प्रभावशीलता पर बड़ा प्रभाव आकार है। इसके बड़े प्रभाव आकार का प्रमुख कारण यह है कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का मान कक्षा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के मान से सार्थक रूप से अधिक है। जो इस बात का द्योतक है कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों को कक्षा, परिवार तथा साथी समूह के द्वारा इस प्रकार का अधिगम वातावरण मिलता है जो उनकी अकादमिक प्रभावशीलता को बढ़ाने का कार्य करता है।

शोध निष्कर्ष

- उरांव जनजाति के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के स्तर का अकादमिक प्रभावशीलता मापनी द्वारा आँकड़ों के संकलन तथा विश्लेषण के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ कि उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है तथा उरांव जनजाति के विद्यार्थी अपनी शिक्षा के प्रति अकादमिक आकांक्षा रखते हैं।
- जेंडर के आधार पर उरांव जनजाति के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि उरांव जनजाति के छात्र तथा छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा उरांव जनजाति के छात्र तथा छात्राओं की अकादमिक प्रभावशीलता एकसमान है तथा इस पर जेंडर का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
- कक्षा के आधार पर उरांव जनजातियों के कक्षा 9 व 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन करने पर पाया गया

तालिका 5— अकादमिक प्रभावशीलता के प्रभाव आकार का विवरण

अकादमिक प्रभावशीलता	विद्यार्थियों की संख्या	माध्य	मानक विचलन	प्रभाव आकार	निरपेक्ष मान
समूह	कक्षा 9	51	91. 94	3.641	0.81
	कक्षा 10	49	88.92	3.851	

© NCERT not to be republished

कि कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता का माध्य फलांक, कक्षा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के माध्य फलांक से सार्थक रूप से अधिक है। इस प्रकार उरांव जनजाति के कक्षा 9 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता कक्षा 10 के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता की तुलना में अधिक है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं—

- **शिक्षक**—इस शोध अध्ययन के परिणामों से प्राप्त अकादमिक प्रभावशीलता का ज्ञान जनजाति समुदाय के साथ-साथ अन्य शिक्षकों को उरांव जनजाति समुदाय के साथ-साथ अन्य जनजाति समुदाय के विद्यार्थियों की रुचि, आवश्यकता तथा क्षमताओं को पहचानने में सहायता मिलेगी। जिसके परिणामस्वरूप वे विद्यार्थियों को उनकी रुचि, आवश्यकता तथा क्षमताओं के अनुसार सीखने के अवसर प्रदान कर सकेंगे। साथ ही, उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के शोध निष्कर्ष विद्यालयों में विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों को समायोजन में सहायता प्रदान करेंगे।
- **पाठ्यचर्या निर्माता**— इस शोध अध्ययन के परिणामों से पाठ्यचर्या निर्माताओं को पाठ्यचर्या के विकास में उरांव जनजाति के विद्यार्थियों की अकादमिक प्रभावशीलता के अनुरूप उनकी आवश्यकताओं की पहचान, उद्देश्यों का निर्धारण, विषय-वस्तु का चयन एवं संगठन, उनके अधिगम अनुभवों आदि को जानने एवं उनके अनुरूप पाठ्यचर्या निर्माण में सहायता मिलेगी।
- **शोधार्थी**— इस शोध अध्ययन कार्य के परिणाम उन शोधार्थियों के लिए एक आधार प्रदान करेंगे, जो उरांव जनजाति की शिक्षा की अकादमिक प्रभावशीलता तथा उनकी व्यावसायिक अभिरुचियों के संबंध का अध्ययन करना चाहते हैं।
- **अध्यापक एवं अभिभावक**— इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष अध्यापकों को उनके विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को उनके बच्चों की माध्यमिक स्तर के पश्चात् उच्च कक्षाओं में आगे की पढ़ाई के लिए प्रवेश लेने पर शैक्षिक रुचि को जानने में सहायता करेंगे।

संदर्भ

कोहेन, जे. 1988. *स्टैटिस्टिकल पावर एनालिसिस फ़ॉर दी बिहेवियरल साइंसेज (सेकंड एडिशन)*. हिल्सडेल. लॉरेन्स एलबर्म एसोसिएशन्स, न्यू जर्सी.

चन्द्रा, डी. के और पी. के. नायक. 2018. बिलासपुर ज़िले के बैगा जनजाति के शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस एजुकेशन एंड रिसर्च*. 3(3).

दास, बी. सी. ए. 2006. *स्टडी ऑफ़ डी.पी.ई.पी. इंटरवेंशन इन ट्राइबल एजुकेशन एट प्राइमरी स्टेज एंड इट्स इफ़ैक्टिवनेस इन उड़ीसा*. अप्रकाशित डी.फिल शोध प्रबंध. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहबाद, उत्तर प्रदेश.

© NCERT not to be republished

पालीवाल, पी. 2011. *अनुसूचित जनजाति के शैक्षिक विकास में कार्यरत गैर-सरकारी संगठनों के योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन*. अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध. उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश.

पाशा, एम. ए. 2016. छत्तीसगढ़ राज्य के आदिवासियों के विकास की स्थिति. *एशियन जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लीनरी स्टडीज़*. 4(10).

प्रधान, एन. के. और पी. के. नायक. 2018. हो और सबर जनजातियों के गृह वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन — पश्चिम सिंहभूम ज़िले के विशेष संदर्भ में. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस एजुकेशन एंड रिसर्च*. 3(3).

बाटोमोर, टी. बी. 1972. *सोशियोलॉजी — ए गाइड टू प्रॉब्लम्स एंड लिटरेचर*. जार्ज एलन एंड अन्विन, बॉम्बे.

सिंह, ए. के. 1992. *ग्रामीण समुदाय में सामाजिक परिवर्तन*. क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished